(1) दोनों वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण आ जाना।

यथा – रमा+ईशः = रमेशः

सदा+एव = सदैव

(2) दोनों वर्णों में से एक के स्थान पर नया वर्ण आ जाना।

यथा – इति+आदि = इत्यादि

अनु+अयः = अन्वयः

(3) दोनों वर्णों के मध्य एक नया वर्ण आ जाना।

यथा – वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

(4) दोनों वर्णों का परिवर्तित हो जाना।

यथा – तत् + हितम् = तद्धितम्

वाक् + हरिः = वाग्घरिः

15.3.3 सन्धि की व्यवस्था

संस्कृत □ाषा में सन्धि करने की व्यवस्था के लिए नियम निर्धारित किये गये हैं, जिनके अनुसार कहाँ–कहाँ सन्धि करना आवश्यक है यह विचार किया गया है। इस व्यवस्था को दर्शाते हुए एक पद्य में कहा गया है–

''संहितैकपदे नित्या नित्या धातुपसर्गयोः।

नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।''

अर्थात् एक पद में सन्धि नित्य है, अर्थात् सन्धि करना आवश्यक है, उपसर्ग और धातु को एक साथ रखने पर सन्धि करना आवश्यक है, समस्तपद बनाने में सन्धि करना आवश्यक है, परन्तु यदि वाक्य लिखते समय दो पद अलग–अलग हैं तो उनको मिलाकर लिखना अर्थात् सन्धि करना अपनी विवक्षा अर्थात् इच्छा पर नि□र करता है।

यथा – एक पद में– ने+अनम् = नयनम् रूप से सन्धि करना आवश्यक है।

धातु और उपसर्ग में – अ□ि+आसः = अभ्यासः रूप से सन्धि करना आवश्यक है।

समास में– निः+सन्देहः = निस्सन्देहः रूप से सन्धि करना आवश्यक है, परन्तु वाक्य में सन्धि करके अथवा अलग–अलग रखकर □ी पद लिखे जा सकते हैं।

15.4 सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है–

(1) अच् सन्धि स्वर सन्धि

(2) हल् सन्धि व्यंजन सन्धि

(3) विसर्ग सन्धि

15.4.1 अच् (स्वर) सन्धि का सामान्य परिचय

दो स्वरों की अत्यधिक समीपता के कारण जब इनमें से एक स्वर या दोनों स्वरों में विकार अथवा परिवर्तन होता है, तो इसे स्वर सन्धि (अच् सन्धि) कहते हैं।

यथा– विद्या + आलयः = विद्यालयः

इति + आदि = इत्यादि

15.4.2 हल् (व्यंजन) सन्धि का सामान्य परिचय

जब दो व्यंजनों की परस्पर अत्यधिक निकटता अथवा एक स्वर और एक व्यंजन की अत्यधिक निकटता के कारण व्यंजन में विकार या परिवर्तन होता है, तब इसे हल् (व्यंजन) सन्धि कहते हैं।

यथा– सत् + चित् = सच्चित्

जगत् + ईशः = जगदीशः

15.4.3 विसर्ग सन्धि का सामान्य परिचय

जब विसर्ग के पश्चात् कोई स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में विकार या परिवर्तन होता है तब इसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

यथा– रामः + चलति = रामश्चलति।

मुनिः + आगतः = मुनिरागतः

15.5 अच् (स्वर) सन्धि के भेद

स्वर सन्धि के प्रमुख □द इस प्रकार हैं–

1. यण् सन्धि।
2. अयादि सन्धि।
3. गुण सन्धि।
4. वृद्धि सन्धि।
   वृद्धि सन्धि का अपवाद– पररूप सन्धि।
5. पूर्व रूप सन्धि।
6. दीर्घ सन्धि।
   दीर्घ सन्धि का अपवाद प्रकृति □ाव सन्धि।

15.6 यण् सन्धि

15.6.1 यण् सन्धि के आवश्यक सूत्रों की व्याख्या

1. **इकोयणचि** – यदि ह्रस्व अथवा दीर्घ 'इक्' के पश्चात् असमान स्वर आता है तो इक् के स्थान पर क्रमशः 'यण्' आदेश हो जाता है। जैसे–

   सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः।

   मधु + अरिः = मध्वरिः ।

   धातृ + अंशः = धात्रंशः ।

   लृ + आकृतिः = लाकृतिः ।

2. **तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य** – इकोयणचि में 'अचि' सप्तम्यन्त पद से निर्दिष्ट कार्य व्यवधान रहित पूर्ववर्ती 'इक्' को होता है। तात्पर्य है कि 'अचि' अर्थात् अच् परे रहते पूर्व 'इक्' को 'यण्' आदेश होगा।

3. **स्थानेऽन्तरतम** – एक वर्ण के स्थान पर कई आदेश उपस्थित होने पर अत्यन्त सदृश

वर्ण ही आदेश होता है।

यथा– इ, ई तालु स्थानीय है तो उनको तालु स्थानी 'य्' ही आदेश होगा।

4. **अनचि च** – अच् (स्वर) से परवर्ती यर् (य् व् र् ल्) को विकल्प से द्वित्व होता है परन्तु अच् परे रहते नहीं।

5. **झलां जश् झशि** – झलों (वर्ग के 1, 2, 3, 4 वर्ण और श, ष, स, ह) को झश् (वर्ण के 3, 4) वर्ण परे रहते 'जश्' आदेश होता है।

6. **संयोगान्तस्य लोपः** – संयोगान्त (जब दो हल् वर्ण अन्त में एक साथ हो) पद के अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है।

7. **अलोऽन्त्यस्य** – सूत्र में षष्ठी वि□क्ति से जिस कार्य को कहा जाता है, वह कार्य अन्तिम वर्ण को होता है। जैसे पूर्व सूत्र में ''संयोगान्तस्य'' कहा गया है, इससे अन्तिम वर्ण का ही लोप होगा।

सारांश – यण् सन्धि का मुख्य सूत्र है ''इकोयणचि'' अन्य सूत्र इस सूत्र से सिद्ध होने वाले सन्धि पदों की सिद्धि (विग्रह की पुनःसन्धि में सहायक सूत्र हैं)।

15.6.2 शब्दसिद्धिः

'इकोयणचि'' सूत्र में आये मुख्य उदाहरणों का सन्धि विग्रह एवं सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि–

1. सुध्युपास्यः –

शब्द का सन्धि विग्रह – सुधी+उपास्यः

''इकोयणचि'' सूत्र से असमान स्वर परे रहते इ को य् आदेश–सुध्य्+उपास्यः

= सुध्युपास्यः

रूप सिद्ध हुआ।

यही सुधी+उपास्यः विग्रह विकल्प से ''सुद्ध्युपास्यः'' □ी बनता है। उसकी सिद्धि निम्न है –

सुद्ध्युपास्यः – शब्द का सन्धि विग्रह – सुधी+उपास्यः

''इकोयणचि'' सूत्र से इ को य् आदेश – सुध् य्+उपास्यः

''अनचि च'' से ध् को द्वित्व (विकल्प से) – सुध्ध्य्+उपास्यः

''झलां जश् झशि'' से पूर्व ध् को द् आदेश – सुद्ध्य्+उपास्यः

= सुद्ध्युपास्यः

2. **मध्वरिः** –

शब्द का सन्धि विग्रह – मधु+अरिः

''इको यणचि'' से इ को व् आदेश– मध्व+अरिः

= मध्वरिः

रूपसिद्ध हुआ।

विकल्प से ''मद्ध्वरिः''

मद्ध्वरिः – शब्द का सन्धि विग्रह – मधु+अरिः

''इको यणचि'' सूत्र से उ का व् आदेश – म ध् व्+अरिः

''अनचि च'' से विकल्प से ध् को द्वित्व – म ध् ध् व् + अरिः

''झलां जश् झशि'' से पूर्व ध् को द् – म द् ध् व् + अरिः

= मद्ध्वरिः

रूप सिद्ध हुआ।

3. धात्रंश –

शब्द का सन्धि विग्रह – धातृ+अंश

''इको यणचि'' सूत्र से { को र् आदेश – धात् र्+अंशः

= धात्रंशः

रूप सिद्ध हुआ।

विकल्प से धात्त्रंशः होगा –

धात्त्रंशः – शब्द का सन्धि विग्रह – धातृ+ अंशः

''इको यणचि'' से ऋ को र् आदेश – धात्र्+ अंशः

''अनचि च'' से त् को विकल्प से द्वित्व – धात्त्र्+अंशः

= धात्त्रंशः

रूप सिद्ध हुआ।

4. लाकृति :–

शब्द का सन्धि विग्रह – लृ+आकृतिः

''इको यणचि'' से लृ को ल् आदेश – ल्+आकृतिः

= लाकृतिः

रूप सिद्ध हुआ।

अभ्यास के लिए 'यण्' सन्धि के अन्य इदाहरण :–

आ ई + असमान स्वर = य्

यदि + अपि = यद्यपि

देवी + अर्चा = देव्यर्चा

प्रति + ऊहः = प्रत्यूहः

अति + ऐश्वर्यम् = अत्यैश्वर्यम्

इति + आदि = इत्यादि

अति + उत्तमः = अत्युत्तमः

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः

दधि + ओदनम् = दध्योदनम्

इति + आह = इत्याह

पार्वति + आराधनम् = पार्वत्याराधनम्

प्रति + उपकारः = प्रत्युपकारः

परिवर्तन का क्रम :–

यदि+अपि   य द् य् अपि = यद्यपि।

इदाहरण–   इ, ऊ+असमान स्वर = व्

अनु+अयः = अन्वयः

गुरु+आदेशः = गुर्वादेशः

ऋतु+इकः = ऋत्विकः

अनु+एषणम् = अन्वेशषम्

लघु+औदार्यम् = लघ्वौदार्यम्

मधु+अरिः = मध्वरिः

प्र□+आज्ञा = प्रभ्वाज्ञा

वधू+आगमनम् = वध्वागमनम्

वधू+ऐश्वर्यम् = वध्वैश्वर्यम्

वधू+ईक्षणम् = वध्वीक्षणम्

परिवर्तन का क्रम :–

वधू+आगमनम् – व ध् व् आगमनम्   वध्वागमनम्

उदाहरण–   ऋ, ऋ + असमान स्वर = र्

पितृ+अर्थम् = पित्रर्थम्

मातृ+इच्छा = मात्रिच्छा

पितृ+आदेशः = पित्रादेशः

धातृ+अंशः = धात्रंशः

परिवर्तन का क्रम –

पितृ+आदेशः – पित् र्+ आदेशः = पित्रादेशः

उदाहरण –   लृ+आकृति = लाकृतिः

15.7 अयादि सन्धि :–

15.7.1 अयादि सन्धि के आवश्यक सूत्र :–

1. **एचोऽयवायाव** :– एच् (ए,ओ,ऐ, औ) को क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होता है यदि बाद में कोई अच् (स्वर) हो तो। परन्तु पद के अन्त में आने वाले 'एच्' को नहीं। यथा– हरये, विष्णवे, नायकः, पावकः।

2. **यथासंख्यमनुदेशः समानाम्** :– जिस स्थान पर आदेश होता है और जो किसी वर्ण के स्थान पर होता है, वहाँ पर आदेश क्रम से होता है। जैसे ए, ओ, ऐ, औ को क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होता है।

3. **वान्तोयि प्रत्यये** – ओ, औ के पश्चात् यदि य से प्रारम□ होने वाला प्रत्यय है। तब □ी ओ को 'अव्' और औ को 'आव्' आदेश होता है।

   यथा– गो+यम्   गव्यम्, नौ+यम् त्र   नाव्यम्।

15.7.2 शब्द सिद्धि

अयादि सन्धि के सूत्रों में आये हुए उदाहरणों का सन्धि विग्रह एवं सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि :–

1. हरये = हरे + ए

1. यहाँ पर हरे में एकार के बाद 'अच्' एकार है–	हरे + ए
2. 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' से आदेश क्रम से होता है–	ए को अय् होगा।
3. 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए को अय् आदेश होता है–	हर्+अय्+ए
4. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'हरये'

2. विष्णवे = विष्णो + ए

1. यहाँ पर विष्णो में ओकार के बाद 'अच्' एकार है–	विष्णो + ए
2. 'यथासंख्यमनुदेशः सूत्र' में आदेश क्रम से होता है–	ओ को अव् होगा।
3. 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को अव् होगा –	विष्ण्+अव्+ए
4. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'विष्णवे'

3. नायकः = नै + अकः

1. यहाँ पर नै में ऐ के बाद 'अच्' अ है–	नै + अकः
2.'एचोऽयवायावः' सूत्र से ऐ को आय् होगा –	न्+आय्+अकः
3.'यथासंख्यमनुदेशः' से ऐ को क्रमानुसार आय् होगा	
4. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	नायकः

4. पावकः = पौ + अकः

1. इस स्थान पर पौ में औ के आगे 'स्वर' अकार है–	पौ + अकः
2.'यथासंख्य्' से क्रमशः होगा –	औ के स्थान पर आव्
3. 'एचोऽयवायावः' से औ को आव् होता है–	प्+आव्+अकः
4. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'पावकः'

5. गव्यम् = गौ + यम्

1. यहाँ पर य से प्रारं□ होने वाला प्रत्यय बाद में है–	गौ + यम्
2.'वान्तो यि प्रत्यये' से ओ को अव् होता है–	ग्+अव्+यम्
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'गव्यम्'

6. नाव्यम् = नौ + यम्

1. यहाँ पर य से प्रारं□ होने वाला प्रत्यय बाद में है–	नौ + यम्
2.'वान्तो यि प्रत्यये से औ को आव् होता है–	न्+आव्+यम्
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'नाव्यम्'

7. गव्यूतिः = गो + यूतिः

1. यहाँ पर मार्ग में परिमाण (नाप) का अर्थ है–	गो + यूतिः
2.'अध्वपरिमाणे च' वार्तिक से ओ को अव् होता है–	ग्+अव्+यूतिः

3. इन सबको संयुक्त करने पर बना— 'गव्यूतिः'

अयादि सन्धि के अभ्यास के लिए अन्य इदाहरण :—

ने+अनम् = नयनम्	गो+एषणा = गवेषणा
शे+अनम् = शयनम्	□ौ+अनम् = □वनम्
शे+इतः = शयितः	सो+अनम् = सवनम्
दे+अम् = देयम्	नै+अकः = नायकः
गे+अम् = गेयम्	सै+अकः = सायकः
यो+अनम् = यवनम्	कस्मै+ऐश्वर्यम् = कस्मायैश्वर्यम्
पो+अनम् = पवनम्	पौ+अकः = पावकः
द्वौ+इति = द्वाविति	

15.8 गुण सन्धि

15.8.1 गुण सन्धि के आवश्यक सूत्र —

1. **अदेङ् गुण** — अ ए और ओ को गुण कहते हैं।

2. **तपरस्तत्कालस्य** — जिस स्वर के बाद त् लगा रहता है, वह स्वर अपने समान काल वाले को ही बोध करता है। अतएव अदेङ् गुणः में अत् (अ) का अर्थ ह्रस्व अ है।

3. **आद्गुणः** —

   1. अ या आ के बाद इ या ई होगा तो दोनों का 'ए' होगा।
   2. अ या आ के बाद ऋ या ऊ होगा तो दोनों को 'ओ' होगा।
   3. अ या आ के बाद ऋ या ॠ होगा तो दोनों को 'अर्' होगा।
   4. अ या आ के बाद लृ होगा तो दोनों को 'अल्' होगा।

4. **उपदेशेऽजनुनासिक इत्** — उपदेश की अवस्था में जो अच् (स्वर) अनुनासिक है, वे इत् होते हैं इत् होने से इन स्वरों का लोप हो जाता है।

5. **उरण् रपरः** — ऋके स्थान में जो अण् (अ इ उ) होता है, उसके बाद में र् और लग जाता है। अतः इन आदेशों का रूप अर्, उर् होता है । (क) कृष्णर्द्धि— (कृष्ण की समृद्धि) कृष्ण + ऋद्धि। और ऋ का गुण होकर अर्। (ख) तवल्कारः (तेरा लकार या लृ) — तव + लृकारः और लृ को गुण होकर अल् हुआ।

6. **लोपः शकल्यस्य** — अकार (अ और आ) के परवर्ती पदान्त य् और व् का विकल्प से लोप होता है, बाद में अश् (स्वर, अन्तःस्थ, ह, वर्ग के 3,4,5) हो तो।

7. **अपवाद** —

   पूर्वत्राऽसिद्धम् — पाणिनी की अष्टाध्यायी में 8 अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। सवा सात अध्याय की दृष्टि में अगले तीन पाद असिद्ध हैं और इन तीन पादों में □ी पूर्व सूत्र की दृष्टि से अगला सूत्र असिद्ध है। असिद्ध का अ□प्राय यह है कि पूर्व सूत्रों की दृष्टि में बाद के सूत्र के द्वारा किया गया कार्य 'नहीं हुआ है' ऐसा माना जाता है। जैसे— लोपः शकल्यस्य के द्वारा किया गया य् या व् का लोप आद् गुणः की दृष्टि में नहीं हुआ है, क्योंकि लोप करने वाला सूत्र त्रिपाद का है। अतः य् और व् के लोप

वाले स्थानों पर गुण नहीं होता है।

15.8.2 शब्द सिद्धि –

गुण सन्धि में आये हुए उदाहरणों का सन्धि–विग्रह एवं सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि

1. **उपेन्द्रः** = उप + इन्द्रः

1. 'अदेङ् गुणः' सूत्र का अर्थ है, अ, ए, ओ को गुण करते हैं– उप+इन्द्रः
2. 'तपरस्तत्कालस्य' के अनुसार अत् का अर्थ ह्रस्व है– उप+इन्द्रः
3. 'आद् गुणः' के अनुसार प में अकार व इकार को ए होगा– उप+(अ+इ=ए) न्द्रः
4. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'उपेन्द्रः'

2. **गंगोदकम्** = गंगा + उदकम्

1. यहाँ पर गुण संधि है– गंगा+ उदकम्
2. 'आद् गुणः' से आ और उ को ओ होगा– गंग् (आ+उ=ओ) दकम्
3. इनको संयुक्त करने पर बना–' गंगोदकम्'

3. **कृष्णर्द्धि** = कृष्ण + ऋद्धिः

1. यहाँ पर 'आद् गुणः' से गुण संधि होगी– कृष्ण+ ऋद्धिः
2. 'उरण रपरः' से अ और ऋ को अर् होगा – कृष्ण (अ+ऋ=अर्)+द्धिः
3. इनको संयुक्त करने पर बना– 'कृष्णर्द्धिः'

4. **तवल्कारः** = तव + लृकारः

1. यहाँ पर 'आद् गुणः' से गुण संधि होगी– तव+ लृकार
2. 'उरण रपरः' से अ और लृ को अल् होगा– तव् (अ+लृ=अल्)+कारः
3. इनको संयुक्त करने पर बना– 'तवल्कारः'

5. **हर इह, हरयिह्** = हरे + इह

1. इस संधि में स्थित है– हरे+इह
2. 'एचोऽयवायावः' से हरे के ए को अय्– हर्+अय्+इह
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'हरयिह' सिद्ध हुआ।

अपवाद रूप से हर इह बनेगाः

'पूर्वत्रासिद्धम्' से 'आद् गुणः' के कारण य् का लोप वाले स्थान पर गुण नहीं होता– हर्+अ+इह

हर इह

अतः विकल्प से रूप बनेगा– 'हर इह'

6. **विष्ण इह, विष्णविह** = विष्णो + इह

1. संधि से पूर्व शब्द है– विष्णो+इह
2. 'एचोऽयवायावः' से विष्णो के ओ को अव्– विष्ण्+अव्+इह
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'विष्णविह'

'पूर्वत्रासिद्धम्' से विकल्प से व् का लोप होगा– विष्ण्+अ+इह

इन सबको संयुक्त करने पर बना– विष्ण इह

गुण सन्धि के अभ्यास के लिए अन्य इदाहरण –

नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः

देव + ईशः = देवेशः

राम + ईश्वरः = रामेश्वरः

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

राजा + इन्द्रः = राजेन्द्र

गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः

गण + ईशः = गणेशः

देव + इच्छा = देवेच्छा

हित + उपदेश = हितोपदेशः

नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा

दया + ऊनः = दयोनः

सूर्य + उदय = सूर्योदयः

परीक्षा + उत्सुकः = परीक्षोत्सुकः

जल + उर्मिः = जर्लोमिः

जल + ओघः = जलोघः

देव + ऋषिः = देवर्षिः

महा + ऋषिः = महर्षिः

महा + ऋद्धिः = महर्द्धिः

कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः

15.9 वृद्धि सन्धि –

15.9.1 वृद्धि सन्धि के आवश्यक सूत्र –

1. **वृद्धिरादैच्** – आ, ऐ और औ को 'वृद्धि' कहते हैं।

2. **वृद्धिरेचि** – (1) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' होगा। (2) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों के स्थान पर 'औ' होगा। यह गुण का अपवाद सूत्र है। कृष्णैकत्वम् – (कृष्ण की एकता) – कृष्ण + एकत्वम्। अ और ए को ऐ वृद्धि एकादेश। गङ्गौघः (गंगा का प्रवाह) गङ्गा + ओघः। आ और औ का औ वृद्धि एकादेश, देवैश्वर्यम् (देवों का ऐश्वर्य) देव + ऐश्वर्यम्। अ और ऐ को ऐ वृद्धि एकादेश। कृष्णौत्कण्ठ्यम् (कृष्ण के प्रति उत्कण्ठा) कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्। अ और औ को औ वृद्धि एकादेश।

3. **एत्येधत्यूठ्सु** – अकार के ए से आरम□ होने वाला इण् (इ) और एध् धातु का कोई रूप हो या ऊठ् (उठ् आदेश वाला ऊ) हो तो दोनों के स्थान पर वृद्धि (ऐ आ औ)

एकादेश (एक आदेश वाला अक्षर) होता है। उपैति (समीप आता है) उप+एति। अ और ए को ऐ वृद्धि एकादेश। उपैधते (समीप में बढ़ता है।) उप+ एधते। अ और ए का ऐ वृद्धि एकादेश। प्रष्ठौहः (प्रष्ठवाह् का बछड़ा जिसके गले में □ारी लकड़ी वश में करने के लिए बांधी गई है।) – प्रष्ठ+ऊहः। अ और ऊ को □ी औ वृद्धि एकादेश।

अपवाद–

(1) वार्तिक (अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्) अक्ष+ऊहिनी को वृद्धि एकादेश होता है। अक्षौहिणी सेना– अक्ष + ऊहिणी। अ और ऊ को औ तथा न का ण।

(2) वार्तिक (प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु) – प्र के बाद ऊह, ऊढ, ऊढ़ि, एष और एष्य हो तो वृद्धि एकादेश होता है। प्रौहः (उत्कृष्ट तार्किक) प्र+ऊहः। अ और ऊ को औ वृद्धि एकादेश, प्रौढ़ (प्रौढ़ता को प्राप्त) प्र+ऊढ। प्रौढ़िः (प्रोढ़ता) प्र+ऊढ़िः। प्रैष (□जना)–प्र+एषः, प्रेष्यः (नौकर) प्र+एष्यः। स□ी स्थानों पर औ या ऐ वृद्धि एकादेश हुआ है।

15.9.2 शब्द सिद्धि

वृद्धि सन्धि के सूत्रों में आये हुए उदाहरणों का सन्धि विग्रह एवं सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि

1. **कृष्णैकत्वम्** = कृष्ण + एकत्वम्

1. 'वृद्धिरेचि' से अ के बाद ए को (दोनों को) ऐ होता है–	कृष्ण+एकत्वम्
2. अ और ए को 'ऐ' एकादेश होता है–	कृष्ण्+ऐ+कत्वम्
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'कृष्णैकत्वम्'

2. **गङ्गौघः** = गङ्गा + ओघः

1. 'वृद्धिरेचि' से आ,ऐ औ को वृद्धि कहते हैं–	गङ्गा+ओघः
2. 'वृद्धिरेचि' से आ और औ को 'औ' वृद्धि एकादेश–	गङ्ग्+औ+घः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	गङ्गौघः'

3. **देवैश्वर्यम्** = देव + ऐश्वर्यम्

1. 'वृद्धिरादैच्' से यहाँ वृद्धि हुई–	देव+ऐश्वर्यम्
2. 'वृद्धिरेचि' से यहाँ अ और ऐ को 'ऐ' वृद्धि एकादेश–	देव्+ऐ+श्वर्यम्
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'देवैश्वर्यम्'

4. **कृष्णौत्कण्ठ्यम्** = कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्

1. 'वृद्धिरादैच्' से यहाँ वृद्धि संधि–	कृष्ण+औत्कण्ठ्यम्
2.'वृद्धिरेचि' से अ और औ को 'औ' वृद्धि एकादेश–	कृष्ण्+औ+त्कण्ठ्यम्
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'कृष्णौत्कण्ठ्यम्'

5. **उपैति** = उप + एति

1. यहाँ पर उप के बाद में एति है–	उप+एति
2.'एत्येधत्यूठ्सु' से अ और ए को 'ऐ' वृद्धि एकादेश–	उप्+ऐ+ति
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'उपैति'

6. **उपैधते** = उप + एधते

1. अकार के बाद एध् धातु का रूप है– उप+एधते

2.'एत्येधत्यूठ्सु' से अ और ए को 'ऐ' वृद्धि एकादेश– इप्+ऐ+धते

3. इन सबको मिलाने पर रूप सिद्ध हुआ– 'उपैधते'

7. **प्रष्ठौहः** = पृष्ठ + ऊहः

1. प्रष्ठ के बाद ऊठ् आदेश वाला ऊ है– प्रष्ठ+ऊहः

2.'एत्येधत्यूठ्सु' से अ और ऊ को 'औ' वृद्धि एकादेश– पृष्ठ्+औ+हः

3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'प्रष्ठौहः'

8. **उपेतः** = उप + इतः

1. यह 'एत्येधत्यूठ्सु' का प्रत्युदाहरण है– उप+इतः

2.'आद् गुणः' से यहाँ अ और इ को 'ए' गुण एकादेश– उप्+ए+तः

3. इनको मिलाने पर रूप बना– 'उपेतः'

9. **अक्षौहिणी** = अक्ष + ऊहिणी

1. यहाँ 'अक्षादूहिन्या–मुपसंख्यानम्' वार्तिक लगेगा– अक्ष + ऊहिनी

2. उक्त वार्तिक से यहाँ अ और ऊ को 'औ' वृद्धि एकादेश अक्ष्+औ+हिनी

3. 'णत्व विधान' से न् को ण् होगा– अक्ष+औ+हिणी

4. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'अक्षौहिणी'

10. **प्रौहः (उत्कृष्ट तार्किक)** = प्र + ऊहः

1. यहाँ 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वार्तिक लगेगा– प्र+ऊहः

2. इस वार्तिक से अ और ऊ को 'औ' वृद्धि एकादेश– प्र्+औ+हः

3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'प्रौहः'

11. **प्रौढः (प्रौढता को प्राप्त)** = प्र + ऊढः

1. यहाँ 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वार्तिक लगेगा– प्र+ऊढः

2.'प्रादूहो' वार्तिक से अ और ऊ को 'औ' वृद्धि एकादेश– प्र्+औ+ढः

3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'प्रौढ़ः'

12. **प्रेषः** = प्र + एषः

1. यह 'प्रादूहो' वार्तिक का उदाहरण है– प्र+एषः

2. इस वार्तिक से प्र के बाद एषः को ऐ वृद्धि एकादेश– प्र्+ऐ+षः

3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'प्रैषः'

13. **प्रेष्यः (नौकर)** = प्र + एष्यः

1. इसकी सिद्धि 'प्रादूहो' वार्तिक से होगी – प्र+एष्यः

2. वार्तिक से अ और ए को 'ऐ' वृद्धि एकादेश– प्र्+ऐ+ष्यः

3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'प्रैष्यः'

14. **सुखार्तः (सुख से प्राप्त)** = (सुखेन ऋतः) सुख + ऋतः

1. 'ऋते च तृतीया समासे' वार्तिक का यह इदाहरण है – सुख + ऋतः

2. यहाँ पर अ और ऋ को वृद्धि 'आर्' हुआ– सुख्+अर्+त

3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'सुखार्तः'

वृद्धि सन्धि के अभ्यास के लिए अन्य इदाहरण

अद्य + एव = अद्यैव	लोक + एषणा = लोकैषणा
तव + ऐश्वर्यम् = तवैश्वर्यम्	मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
सदा + एव = सदैव	यथा + एव = यथैव
महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्	विद्या + ऐश्वर्यम् = विद्यैश्वर्यम्
दिव + ओकसः = दिवौकसः	तिल + ओदनम् = तिलौदनम्
जन + औदार्यम् = जनौदार्यम्	शील + औचित्यम् = शीलौचित्यम्
महा + औशधिः = महौषधिः	गंगा + ओघः = गंगौघः
महा + औदार्यम् = महौदार्यम्	महा + औत्सुक्यम् = महौत्सुक्यम्

पर रूप सन्धि (वृद्धि सन्धि का अपवाद)

पर रूप सन्धि कहीं वृद्धि संधि का अपवाद होता है और कहीं दीर्घ सन्धि का यहाँ वृद्धि सन्धि के अपवाद पररूप सन्धि के आवश्यक सूत्र दिये जा रहे हैं

एङि पररूपम्– अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ से प्रारं□ होने वाली कोई धातु हो तो पूर्वपर के स्थान पर पररूप (बाद वाला अक्षर) एकादेश होता हैं। अर्थात् अ+ए – ए, अ + ओ–ओ। (क) प्रेजते (अधिक हिलता है) – प्र+एजते। अ और ए को ए। (ख) उपोषति (समीप जाता है) उप+ओषति। अ और ओ को ओ।

शब्द सिद्धि

1. **प्रेजते** = प्र + एजते

   1. 'एङि पररूपम्' सूत्र का यह उदाहरण है– प्र+एजते।

   2. इससे पररूप एकादेश (अ+ए–ए) होता है– प्र्+एजते।

   3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'प्रेजते'

2. **उपोषति** = उप + ओषति

   1. 'एङि पररूपम्' सूत्र से इसकी सिद्धि – उप+ ओषति

   2. इससे अ+ओ – ओ होता है– उप् (ओ) षति

   3. इन सबको संयुक्त करने पर बना– 'उपोषति'

15.10 पूर्वरूप सन्धि

1510.1 पूर्वरूप सन्धि के आवश्यक सूत्र –

एङः पदान्तादति – यदि पद के अन्त में एङ्. (ए अथवा ओ) हो और इसके बाद में ह्रस्व अ हो तो अयादि (अय्–अव्) न होकर पूर्व रूप एकादेश हो जाता है। सन्धि दिखाने के लिए ऽ का चिह्न (अवग्रह) लगाया जाता है। यथा– हरे+अव = हरेऽव।

अपवाद–

सर्वत्रवि□ाषा गोः – गो शब्द के बाद 'अ' आने पर विकल्प से प्रकृति □ाव (कोई परिवर्तन नहीं) रहता है यथा– गो+अग्रम् = गो अग्रम् अथवा गो + अग्रम् = गोऽग्रम्

15.10.2 शब्द सिद्धि

1. हरेऽव = हरे + अव

1. यह पूर्वरूप सन्धि का ादाहरण है–   हरे+ अव।
2. 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पद के अन्तिम ए के बाद आ आवे तो इसे पूर्वरूप होता है और 'अ' हटने के सूचनार्थ अवग्रह चिन्ह (ऽ) लगा दिया जाता है–   हरे+ऽ+व
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–   'हरेऽव'

2. विष्णोऽव = विष्णो + अव

1. यह पूर्वरूप सन्धि का ादाहरण है–   विष्णो + अव
2. 'एङः पदान्तादति' से ओ के बाद अ हाने से पूर्व रूप बना हुआ और 'अ' हटने के सूचनार्थ 'ऽ' लगा–   विष्ण्+ओ+ऽ+व
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–   'विष्णोऽव'

3. गो अग्रम्, गोऽग्रम् = गो + अग्रम्

1. इसके दो रूप सिद्ध होते हैं–   गो+ अग्रम्
2. 'सर्वत्र वि□ाषा गोः' प्रकृति□ाव होकर कोई सन्धि नहीं   'गो अग्रम्'
3. 'एङः पदान्तादति' से पूर्वरूप सन्धि होगी–   'गोऽग्रम्'

पूर्व रूप सन्धि के अभ्यास के लिए अन्य इदाहरणः–

यज्ञे+अग्निः = यज्ञेऽग्निः   साधो+अत्र = साधोऽत्र

वृक्षे+अस्मिन् = वृक्षेऽस्मिन्   बालो+अयम् = बालोऽयम्

गो+अत्र = गोऽत्र

15.11 दीर्घ सन्धि

15.11.1 दीर्घ सन्धि के आवश्यक सूत्र

1. अकः सवर्णे दीर्घः – अक् (अ इ उ) के बाद समान अक्षर हो तो दोनों को उसी वर्ण का दीर्घ अक्षर एकादेश हो जाता है। अर्थात्

अ या आ+ अ या आ = आ

इ या ई+ इ या ई = ई

उ या ऊ+ उ या ऊ = ऊ

ऋ + ऋ = ॠ

यथा – दैत्यारिः (दैत्य + अरिः)

श्रीशः (श्री + ईशः)

विष्णूदयः (विष्णु + उदयः)

होतृकारः (होतृ + ऋकारः)

दीर्घ सन्धि का अपवाद पररूप सन्धि ◻ी होता है, जिसके आवश्यक सूत्र हैं–

1. **अचोऽन्त्यादि टि** – अन्तिम अच् (स्वर) को टि कहते हैं और अन्तिम स्वर के बाद कोई व्यंजन हो तो इस व्यंजन सहित अन्तिम स्वर टि कहा जाता है।

2. **वार्तिक (शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्)** शकन्धु आदि शब्दों में टि (अन्तिम स्वर–सहित अगला अंश) को पररूप हो जाता है। (क) शकन्धुः (शक लोगों का कुआं) – शकः अन्ध ाुः। दोनों के अ को अ पररूप। (ख) ककन्धुः (बेर) –कक+ अन्धुः। दोनों अ को अ। (ग) मनीषः (बुद्धि) – मनस् + ईशः। अस् और ई को ई। (घ) मार्तण्डः (सूर्य) – मार्त + अण्डः। दोनों अ को अ। शकन्ध्वादि आकृतिगण है, अर्थात् जहाँ पर इस प्रकार का कार्य हुआ हो इसे शकन्ध्वादि में मान लेना चाहिए।

15.11.2 शब्द सिद्धि

1. **दैत्यारिः** = दैत्य + अरिः

1. 'अकः सवर्णे दीर्घः' का यह उदाहरण है–	दैत्य+ अरिः
2. इस सूत्र से अ+अ – आ होता है–	दैत्य्+आ+रिः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'दैत्यारिः'

2. **श्रीशः** = श्री + ईशः

1. यहाँ पर सवर्ण दीर्घ सन्धि है–	श्री + ईशः
2. 'अकः सवर्णे दीर्घः' से ई+ई = ई होगा–	श्र्+ई+शः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'श्रीशः'

3. **विष्णूदयः** = विष्णु + उदयः

1. यहाँ पर दीर्घ सन्धि है –	विष्णु+ उदयः
2. अकः सवर्णे दीर्घः से उ + उ = ऊ हुआ–	विष्ण् + ऊ + दयः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'विष्णूदयः'

4. **होतृकरः** = होतृ + ऋकारः

1. यह सवर्ण दीर्घ सन्धि का उदाहरण है–	होतृ+ ऋकारः
2.'अकः सवर्णे दीर्घः' से ऋ + ऋृ – ऋ	होत्+ऋृ+कारः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'होतृकारः'

5. **शकन्धुः** = शक + अन्धुः

1. 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' वार्तिक से सिद्ध होगा–	शक+अन्धुः
2. इससे दोनों अ को 'अ' पररूप होगा–	शक्+अ+न्धुः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'शकन्धुः'

6. **ककन्धुः** = कक + अन्धुः

1. 'शकन्ध्वादिषु' वार्तिक का यह उदाहरण है –	कक + अन्धुः
2. इससे अ + अ को पररूप 'अ' होता है –	कक् + अ + न्धुः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना –	'ककन्धुः'

7. **मनीषा** = मनस् + ईषाः

1. 'अचोऽन्त्यादि टि' से मनस् में 'अस्' टि है–	मनस्+ ईषा
2. 'शकन्ध्वादिषु' से अस् और ई को 'ई'–	मन+ई+षा
3. इन तीनों को संयुक्त करने पर बना–	'मनीषा'

8. **मार्तण्डः** = मार्त + अण्डः

1. अन्तिम स्वर सहित अगला अंश 'टि' होता है–	मार्त+अण्डः
2. 'शकन्ध्वादिषु' वार्तिक से अ+अ – अ–	मार्त+अ+ण्डः
3. इन सबको संयुक्त करने पर बना–	'मार्तण्डः'

दीर्घ सन्धि के अभ्यास के लिए अन्य उदाहरण

शक+अन्धुः = शकन्धुः	कक+अन्धुः = ककन्धुः
कुल+अटा = कुलटा	लांगल+ईषा = लांगलीषा
मार्त+अण्डः = मार्तण्डः	सीमन्+अन्तः = सीमन्तः
मनस्+ईषा = मनीषा	पतत्+अंजलिः = पतंजलिः

15.12 प्रकृतिभाव सन्धि –

प्रकृति □ाव का अर्थ है ज्यों का त्यों रहना अर्थात् कोई परिवर्तन नहीं होना। प्रकृति □ाव होना दीर्घ सन्धि, अयादि और यण् सन्धि का अपवाद है।

15.12.1 प्रकृति भाव सन्धि के आवश्यक सूत्र –

1. **दूराद्धूते च** – दूर से सम्बोधन (पुकारने) में वाक्य की टि (अन्तिम ओर से अच् सहित अंशद्ध को विकल्प से प्लुत होता है। प्लुत के संकेत के लिए इस स्वर के बाद 3 की संख्या लिखी जाती है और उच्चारण में वह वर्ण ह्रस्व, की अपेक्षा तिगुने बल से बोला जाता है।

2. **प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्** – स्वर बाद में होने पर प्लुत और प्रगृह्य को प्रकृति □ाव होता है, अर्थात् वह उसी रूप में रहता है और कोई सन्धि नहीं होती। आगच्छ कृष्ण 3 अत्र गौश्चरति (हे कृष्ण! आओ! यँा गाय चर रही हैं) – दूर से सम्बोधन होने से कृष्ण 3 में अ प्लुत है और प्लुत होने से कृष्ण 3 + अत्र में दीर्घ सन्धि नहीं हुई।

3. **ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्** – ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृति□ाव और सन्धि का अ□ाव। (क) हरी एतौ (ये दो हरि या घोड़े) – हरी ईकारान्त द्विवचन है, अतः प्रगृह्यसंज्ञा और यण् का अ□ाव। (ग) गंगे अमू (ये दो गंगाएँ) एकारान्त द्विवचन होने से प्रगृह्य संज्ञा और पूर्वरूप संधि का अ□ाव।

15.12.2 शब्द सिद्धि

1. आगच्छ **कृष्ण 3 अत्र** गोश्चरति

1. 'दूराद्धूते च' से टि को विकल्प से प्लुत–	कृष्ण + 3+ अत्र
2. 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' से कोई सन्धि नहीं–	कृष्ण+3+अत्र
3. प्लुत होने से कृष्ण + अत्र में दीर्घ सन्धि नहीं–	'कृष्ण 3 अत्र'

2. **हरी एतौ** = हरी + एतौ

1. ईकारान्त द्विवचनं की प्रगृह्यम् संज्ञा— हरी + एतौ

2. 'ईदूदेद् द्विवचनं की प्रगृह्यम्' से संधि का अ□ाव— हरी + एतौ

3. अतः 'इको यणचि' से यण संधि का अ□ाव— हरी + एतौ

4. अतः इसका रूप ऐसा ही रहेगा— 'हरी एतौ'

3. **गङ्गे अमू** = गङ्गे अमू

1. एकारान्त द्विवचन होने से प्रगृह्य संज्ञा तथा पूर्वरूप संधि का अ□ाव—गङ्गे+अमू

2. संधि न होने पर यही रूप रहेगा— 'गङ्गे अमू'

15.13 विसर्ग संधि

15.13.1 विसर्ग संधि के आवश्यक नियम—

1. **विसर्जनीयस्य सः 8/3/34** — यदि विसर्ग के पश्चात् खर् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स्) आए तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। उदाहरण—

रामः+त्रायते = रामस्त्रायते बालः+तिष्ठति = बालस्तिष्ठति

पूर्णः+चन्द्र = पूर्णस् चन्द्रः (स्तोः श्चुना श्चुः से स् को श्) पूर्णश्चन्द्रः

तरोः +छाया = तरोश्छाया गौःचलति = गौश्चलति

रामः+टीकते राम स् टीकते (ष्टुनाष्टु से स् को ष्) रामष्टीकते।

2. **ससजुषो रुः 8/2/66** — पदान्त स् एवं सजुष् शब्द के ष् को रु हो जाता है। (रु के उ का लोप होकर र् शेष रहता है।) उदाहरण—

रामस् = राम र् मुनिस् = मुनिर्

□ानुस् = □ानुर् सजुष् = सजुर्

कविस्+अयम् = कविरयम् निस्+झरः = निर्झरः

3. **अतोरोरप्लुतादप्लुते 6/1/111** — यदि ह्रस्व अ के पश्चात् रु (र्) हो और रु के पश्चात् □ी ह्रस्व अ आए तो रु (र) के स्थान पर उ हो जाता है। (इस उ को पूर्ववर्ती अ के साथ संहित होने के कारण 'आद् गुण': सूत्र से अ+उ ओ हो जाता है। पुनः ओ के पश्चात् अ आने से 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पूर्व रूप सन्धि ओ+अ ओ ऽ हो जाता है।) उदाहरण—

देवस्+अयम् = देवर्+अयम् = देव उ+अयम् = देवो+अयम् = देवोऽयम्

शिवस्+अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः सस्+अपि = सोऽपि

एषस्+अब्रवीत् = एषोऽब्रवीत् रामस्+अस्ति = रामोऽस्ति

4. **हशि च 6/1/112** — यदि ह्रस्व अ के पश्चात् + रु (र्) हो और रु के पश्चात् हश् (ह् य्, व्, र् ल् एवं वर्गों के तृतीय चतुर्थ, पंचम वर्णद्ध आए तो रु (र्) के स्थान पर उ हो जाता है। (उ होने के पश्चात् गुण सन्धि हो जाती है।) उदाहरण—शिवोवन्द्यः

5. **भो—भगो—अघो—अ—पूर्वस्य योऽशि 8/3/15** — यदि □ो, □गो, अघो शब्दों या अ, आ के पश्चात् रु हो, और रु के पश्चात् अश् (सारे स्वर, ह्, य् व् र् ल् एवं वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण) आए तो रु (र्) के स्थान पर य् हो जाता है। उदाहरण—

□ास्+देवाः = □ार्+देवाः = □ाय् देवाः